

बदलते परिदृश्य में भारतीय अर्थव्यवस्था में खाद्य सुरक्षा

मोनू कुमार
शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग
स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहाँपुर
सम्बद्ध: महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

प्रो. (डॉ.) मधुकर श्याम शुक्ल
विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहाँपुर

सारांश

खाद्य सुरक्षा किसी भी देश की सामाजिक स्थिरताएँ आर्थिक विकास और मानव कल्याण का महत्वपूर्ण आधार है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में खाद्य सुरक्षा का प्रश्न केवल पर्याप्त खाद्यान्न उत्पादन तक सीमित नहीं है बल्कि खाद्य की उपलब्धताएँ आर्थिक पहुँचएँ पोषण की गुणवत्ता और दीर्घकालिक स्थिरता से भी जुड़ा है। बदलते राष्ट्रीय और वैश्विक परिदृश्य में जलवायु परिवर्तनएँ कृषि संकटएँ आय.असमानताएँ भूमि एवं जल संसाधनों पर दबावएँ खाद्य कीमतों में उतार.चढ़ाव तथा आपूर्ति.श्रृंखला की कमजोरियाँ खाद्य सुरक्षा को अधिक जटिल बना रही हैं। इस शोध.पत्र में द्वितीयक स्रोतों के आधार पर भारतीय अर्थव्यवस्था में खाद्य सुरक्षा की अवधारणाएँ कृषि और खाद्य सुरक्षा का संबंधएँ प्रमुख चुनौतियाँएँ सरकारी नीतियाँएँ तकनीकी विकासएँ ग्रामीण विकासएँ महिला भागीदारीएँ शहरीकरणएँ भंडारण एवं आपूर्ति.श्रृंखला तथा सतत विकास के संदर्भ में विश्लेषण किया गया है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियमएँ सार्वजनिक वितरण प्रणाली तथा कृषि.संबंधी योजनाओं की भूमिका पर भी चर्चा की गई है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारत ने खाद्यान्न उपलब्धता और वितरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की है लेकिन समावेशी पोषण सुरक्षाएँ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचएँ जलवायु.लचीली कृषि और कुशल आपूर्ति.श्रृंखला के क्षेत्र में निरंतर सुधार की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द: खाद्य सुरक्षा, कृषि विकास, खाद्यान्न उत्पादन, पोषण सुरक्षा, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम,

1. परिचय

खाद्य सुरक्षा किसी भी राष्ट्र की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति का मूल आधार है। भोजन की पर्याप्त उपलब्धता व्यक्ति के स्वास्थ्य, उत्पादकता और जीवन-स्तर को प्रभावित करती है तथा व्यापक स्तर पर मानव पूँजी और आर्थिक विकास की गुणवत्ता निर्धारित करती है। भारत में खाद्य सुरक्षा का महत्व विशेष रूप से अधिक है क्योंकि यहाँ विशाल जनसंख्या, क्षेत्रीय विविधता, कृषि पर व्यापक निर्भरता तथा आय और अवसरों में असमानता जैसी स्थितियाँ मौजूद हैं। हरित क्रांति के बाद भारत ने खाद्यान्न उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि की और खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की। फिर भी खाद्य सुरक्षा का वास्तविक अर्थ केवल उत्पादन की पर्याप्तता नहीं है। किसी परिवार की खाद्य सुरक्षा इस बात पर भी निर्भर करती है कि उसे पर्याप्त, सुरक्षित और पौष्टिक भोजन नियमित रूप से प्राप्त हो तथा वह उसे खरीदने या प्राप्त करने में सक्षम हो।

वर्तमान समय में खाद्य सुरक्षा का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़ और तापमान में वृद्धि कृषि उत्पादकता को प्रभावित कर सकते हैं। दूसरी ओर, कृषि योग्य भूमि, जल संसाधनों और

उत्पादन लागत पर बढ़ता दबाव दीर्घकालीन खाद्य उपलब्धता के लिए चुनौती प्रस्तुत करता है। आय-असमानता और गरीबी के कारण खाद्य की उपलब्धता होने के बावजूद कमजोर वर्गों की वास्तविक पहुँच सीमित हो सकती है। इसी प्रकार, केवल कैलोरी की उपलब्धता पोषण सुरक्षा सुनिश्चित नहीं करती; भोजन की विविधता, स्वास्थ्य, स्वच्छता, मातृ-पोषण और बच्चों की पोषण संबंधी आवश्यकताएँ भी महत्वपूर्ण हैं।

भारत ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, सार्वजनिक वितरण प्रणाली और विभिन्न कृषि एवं पोषण कार्यक्रमों के माध्यम से खाद्य सुरक्षा को संस्थागत आधार प्रदान किया है। इसके साथ डिजिटल तकनीक, स्मार्ट कृषि, उपग्रह एवं ड्रोन आधारित निगरानी, बेहतर भंडारण तथा बाजार से किसानों की डिजिटल कनेक्टिविटी नई संभावनाएँ उत्पन्न कर रही हैं। अतः भारतीय अर्थव्यवस्था में खाद्य सुरक्षा का अध्ययन कृषि, रोजगार, आय, गरीबी, पोषण, तकनीकी परिवर्तन और सतत विकास को एक साथ समझने की माँग करता है। इसी व्यापक दृष्टिकोण से यह अध्ययन खाद्य सुरक्षा की वर्तमान स्थिति, प्रमुख चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

साहित्य समीक्षा

भारतीय अर्थव्यवस्था में खाद्य सुरक्षा का प्रश्न खाद्यान्न उत्पादन के साथ-साथ उपलब्धता, आर्थिक पहुँच, पोषण गुणवत्ता और आपूर्ति की स्थिरता से जुड़ा हुआ है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013 ने खाद्य सुरक्षा के दृष्टिकोण को कल्याणकारी व्यवस्था से अधिकार-आधारित व्यवस्था की ओर महत्वपूर्ण रूप से आगे बढ़ाया। George एवं McKay (2019) ने भारत की सार्वजनिक वितरण प्रणाली और खाद्य सुरक्षा से संबंधित 23 शोध अध्ययनों की समीक्षा में पाया कि PDS गरीब और कमजोर वर्गों के लिए महत्वपूर्ण खाद्य-सुरक्षा तंत्र है, लेकिन लक्ष्यीकरण की कमियाँ, रिसाव, भ्रष्टाचार और प्रशासनिक अक्षमताएँ इसकी प्रभावशीलता को प्रभावित करती हैं। McKay, Sims एवं van der Pligt (2023) ने भारत में खाद्य असुरक्षा के मापन से संबंधित 53 अध्ययनों की व्यवस्थित समीक्षा की और पाया कि विभिन्न अध्ययनों में HFIAS, HFSSM और FIES जैसे अलग-अलग मापन उपकरणों का प्रयोग हुआ है। इससे खाद्य असुरक्षा की तुलनात्मक माप में कठिनाई उत्पन्न होती है और भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप अधिक व्यापक मापन ढाँचे की आवश्यकता सामने आती है। उपलब्ध साहित्य यह भी दर्शाता है कि खाद्य सुरक्षा और पोषण सुरक्षा समान अवधारणाएँ नहीं हैं। पर्याप्त कैलोरी उपलब्धता के बावजूद भोजन की विविधता, स्वास्थ्य, स्वच्छता, मातृ-पोषण और ICDS जैसी सेवाओं की स्थिति पोषण परिणामों को प्रभावित करती है।

अध्ययन के उद्देश्य

- भारतीय अर्थव्यवस्था में खाद्य सुरक्षा की अवधारणा और उसके प्रमुख आयामों का अध्ययन करना।
- कृषि उत्पादन, किसानों की आय और खाद्य सुरक्षा के बीच संबंध का विश्लेषण करना।
- खाद्य सुरक्षा के समक्ष जलवायु परिवर्तन, संसाधन-संकट, पोषण-असुरक्षा और वितरण संबंधी प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना।
- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, सार्वजनिक वितरण प्रणाली तथा कृषि एवं पोषण संबंधी सरकारी पहलों की भूमिका का अध्ययन करना।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है और मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों तथा प्रकाशित साहित्य पर आधारित है। अध्ययन के लिए भारत सरकार के आर्थिक सर्वेक्षण, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्टें, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा से संबंधित सरकारी दस्तावेजों, नीति आयोग की रिपोर्टें, खाद्य एवं कृषि संगठन की प्रकाशित सामग्री तथा विषय से संबंधित पुस्तकों और पूर्ववर्ती अध्ययनों का उपयोग किया गया है। अध्ययन की विषय-वस्तु को खाद्य उपलब्धता, खाद्य तक पहुँच, उपयोग/पोषण और स्थिरता के चार प्रमुख आयामों के आधार पर व्यवस्थित किया गया है।

विश्लेषण की इकाई भारतीय अर्थव्यवस्था है तथा अध्ययन का दृष्टिकोण राष्ट्रीय और नीतिगत स्तर का है।

खाद्य सुरक्षा की अवधारणा एवं प्रमुख आयाम

खाद्य सुरक्षा का आशय ऐसी स्थिति से है जिसमें सभी लोगों को हर समय पर्याप्त, सुरक्षित और पौष्टिक भोजन उपलब्ध हो, जिससे वे स्वस्थ और सक्रिय जीवन जी सकें। इसके चार प्रमुख आयाम हैं:

- उपलब्धता (Availability): पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न एवं खाद्य पदार्थों का उत्पादन और भौतिक उपलब्धता।
- पहुँच (Access): सभी सामाजिक एवं आर्थिक वर्गों की भोजन तक भौतिक और आर्थिक पहुँच।
- उपयोग/पोषण (Utilisation): सुरक्षित, विविध और पोषणयुक्त भोजन का उचित उपभोग तथा उसका स्वास्थ्य पर प्रभाव।
- स्थिरता (Stability): समय के साथ उपलब्धता, पहुँच और उपयोग की निरंतरता बनाए रखना।

भारतीय अर्थव्यवस्था और खाद्य सुरक्षा का संबंध

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की भूमिका खाद्य सुरक्षा के लिए केंद्रीय है। कृषि उत्पादन में वृद्धि से खाद्यान्न की उपलब्धता बढ़ती है, किसानों की आय को समर्थन मिलता है और ग्रामीण रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं। हरित क्रांति के बाद भारत ने खाद्यान्न उत्पादन में उल्लेखनीय प्रगति की। इसके बावजूद खाद्य सुरक्षा का लाभ सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँचाने के लिए आय, वितरण और पोषण से संबंधित बाधाओं को दूर करना आवश्यक है।

इस संदर्भ में खाद्य सुरक्षा को केवल कृषि क्षेत्र का विषय मानना पर्याप्त नहीं है। रोजगार, ग्रामीण आय, गरीबी उन्मूलन, बाजार व्यवस्था, सामाजिक सुरक्षा और सार्वजनिक वितरण प्रणाली भी खाद्य पहुँच को प्रभावित करते हैं। इसलिए कृषि उत्पादकता और सामाजिक संरक्षण के बीच समन्वय खाद्य सुरक्षा की आधारभूत आवश्यकता है।

बदलते परिदृश्य में प्रमुख चुनौतियाँ

1. **जलवायु परिवर्तन:** जलवायु परिवर्तन भारतीय कृषि के लिए सबसे बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़ और तापमान में वृद्धि फसल उत्पादन को प्रभावित करते हैं। इससे खाद्यान्न की उपलब्धता में अस्थिरता आती है।
2. **जनसंख्या वृद्धि:** भारत की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। बढ़ती जनसंख्या के लिए पर्याप्त भोजन उपलब्ध कराना एक बड़ी चुनौती है। सीमित संसाधनों के साथ अधिक उत्पादन करना आवश्यक हो गया है।
3. **भूमि और संसाधनों की कमी:** खेती योग्य भूमि का क्षेत्र धीरे-धीरे कम हो रहा है। शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण कृषि भूमि का उपयोग बदल रहा है। इसके अलावा जल संसाधनों की कमी भी एक गंभीर समस्या है।
4. **कृषि में निवेश की कमी:** कृषि क्षेत्र में पर्याप्त निवेश नहीं होने के कारण आधुनिक तकनीकों का उपयोग सीमित है। इससे उत्पादकता कम रहती है।
5. **वितरण प्रणाली की समस्याएँ:** हालांकि सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से गरीबों को सस्ता अनाज उपलब्ध कराया जाता है। फिर भी इसमें भ्रष्टाचार, रिसाव और गलत लाभार्थियों जैसी समस्याएँ हैं।
6. **पोषण की समस्या:** भारत में कुपोषण एक गंभीर समस्या है। केवल पेट भरने के लिए भोजन पर्याप्त नहीं है। बल्कि संतुलित आहार भी आवश्यक है। बच्चों और महिलाओं में कुपोषण की दर चिंताजनक है।

सरकारी पहल और नीतियाँ

1. राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम:- यह अधिनियम 2013 में लागू किया गया. जिसके तहत देश की लगभग 67 प्रतिशत आबादी को सस्ती दरों पर खाद्यान्न उपलब्ध कराया जाता है। यह खाद्य सुरक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

2. सार्वजनिक वितरण प्रणाली:- यह प्रणाली गरीब और कमजोर वर्गों को सस्ती दर पर अनाज उपलब्ध कराती है। डिजिटल तकनीक के उपयोग से इसमें सुधार लाने का प्रयास किया जा रहा है।

3. मिड-डे मील योजना:- इस योजना के तहत स्कूलों में बच्चों को मुफ्त भोजन दिया जाता है. जिससे उनकी पोषण स्थिति में सुधार होता है और शिक्षा को भी बढ़ावा मिलता है।

4. प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना:- इसका उद्देश्य कृषि में सिंचाई सुविधाओं का विस्तार करना है. जिससे उत्पादन बढ़ाया जा सके।

5. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना:- यह योजना किसानों को फसल नुकसान से सुरक्षा प्रदान करती है. जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती है।

तकनीकी विकास और खाद्य सुरक्षा

तकनीकी परिवर्तन खाद्य सुरक्षा को उत्पादन, संसाधन प्रबंधन, मौसम पूर्वानुमान और बाजार पहुँच के स्तर पर मजबूत कर सकता है। जैव-प्रौद्योगिकी एवं उन्नत बीज, ड्रोन और उपग्रह आधारित फसल निगरानी, स्मार्ट कृषि, सटीक सिंचाई तथा डिजिटल कृषि मंच किसानों को बेहतर निर्णय लेने में सहायता कर सकते हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म किसानों को बाजारों से जोड़कर सूचना की विषमता कम कर सकते हैं और मूल्य खोज को अधिक प्रभावी बना सकते हैं। हालांकि तकनीक का लाभ तभी व्यापक होगा जब छोटे किसानों को प्रशिक्षण, वित्त और डिजिटल अवसंरचना तक समान पहुँच मिले।

खाद्य सुरक्षा, सतत विकास और पर्यावरण

दीर्घकालीन खाद्य सुरक्षा के लिए कृषि उत्पादन बढ़ाने के साथ प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण आवश्यक है। जैविक एवं कम-रसायन कृषि, जल संरक्षण, मृदा स्वास्थ्य सुधार, फसल विविधीकरण और जलवायु-अनुकूल खेती ऐसे उपाय हैं जो वर्तमान खाद्य आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की उत्पादन क्षमता को सुरक्षित रख सकते हैं। खाद्य सुरक्षा और सतत विकास को अलग-अलग न देखकर एकीकृत नीति के रूप में अपनाना आवश्यक है।

ग्रामीण विकास और खाद्य सुरक्षा

ग्रामीण क्षेत्रों में खाद्य सुरक्षा की स्थिति सीधे कृषि और रोजगार से जुड़ी होती है। यदि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ते हैं और किसानों की आय में वृद्धि होती है. तो खाद्य सुरक्षा स्वतः मजबूत होती है। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना जैसी योजनाएँ ग्रामीण आय बढ़ाने में मदद करती हैं।

महिलाओं की भूमिका

खाद्य सुरक्षा में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे कृषि कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभाती हैं और परिवार के पोषण की जिम्मेदारी भी संभालती हैं। महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक संसाधनों तक पहुँच देना खाद्य सुरक्षा को मजबूत कर सकता है।

शहरीकरण और खाद्य सुरक्षा

तेजी से बढ़ते शहरीकरण के कारण खाद्य मांग में वृद्धि हो रही है। शहरी गरीबों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना एक नई चुनौती बन गया है।

शहरी क्षेत्रों में—

- खाद्य आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करना
- सस्ती दरों पर भोजन उपलब्ध कराना
- फूड वेस्टेज को कम करना आवश्यक है।

खाद्य भंडारण और आपूर्ति श्रृंखला

भारत में खाद्यान्न उत्पादन पर्याप्त होने के बावजूद भंडारण और परिवहन की समस्याओं के कारण नुकसान होता है।

- आधुनिक गोदामों का निर्माण
- कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं का विस्तार
- बेहतर लॉजिस्टिक्स सिस्टम

इन सुधारों से खाद्य सुरक्षा को मजबूत किया जा सकता है।

वैश्वीकरण और खाद्य सुरक्षा

वैश्वीकरण के दौर में खाद्य सुरक्षा केवल घरेलू मुद्दा नहीं रह गया है। अंतरराष्ट्रीय बाजार, व्यापार नीतियाँ और कीमतों में उतार-चढ़ाव भी इसे प्रभावित करते हैं। भारत को अपनी खाद्य नीति बनाते समय वैश्विक परिस्थितियों का ध्यान रखना आवश्यक है।

चर्चा

बदलते परिदृश्य में प्रमुख चुनौतियाँ

1. **जलवायु परिवर्तन:**— जलवायु परिवर्तन भारतीय कृषि के लिए सबसे बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़ और तापमान में वृद्धि फसल उत्पादन को प्रभावित करते हैं। इससे खाद्यान्न की उपलब्धता में अस्थिरता आती है।
2. **जनसंख्या वृद्धि:**— भारत की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। बढ़ती जनसंख्या के लिए पर्याप्त भोजन उपलब्ध कराना एक बड़ी चुनौती है। सीमित संसाधनों के साथ अधिक उत्पादन करना आवश्यक हो गया है।
3. **भूमि और संसाधनों की कमी:**— खेती योग्य भूमि का क्षेत्र धीरे-धीरे कम हो रहा है। शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण कृषि भूमि का उपयोग बदल रहा है। इसके अलावा जल संसाधनों की कमी भी एक गंभीर समस्या है।
4. **कृषि में निवेश की कमी:**— कृषि क्षेत्र में पर्याप्त निवेश नहीं होने के कारण आधुनिक तकनीकों का उपयोग सीमित है। इससे उत्पादकता कम रहती है।
5. **वितरण प्रणाली की समस्याएँ:**— हालांकि सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से गरीबों को सस्ता अनाज उपलब्ध कराया जाता है। फिर भी इसमें भ्रष्टाचार, रिसाव और गलत लाभार्थियों जैसी समस्याएँ हैं।

6. पोषण की समस्या:— भारत में कुपोषण एक गंभीर समस्या है। केवल पेट भरने के लिए भोजन पर्याप्त नहीं है। बल्कि संतुलित आहार भी आवश्यक है। बच्चों और महिलाओं में कुपोषण की दर चिंताजनक है।

सरकारी पहल और नीतियाँ

1. राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम:— यह अधिनियम 2013 में लागू किया गया। जिसके तहत देश की लगभग 67 प्रतिशत आबादी को सस्ती दरों पर खाद्यान्न उपलब्ध कराया जाता है। यह खाद्य सुरक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

2. सार्वजनिक वितरण प्रणाली:— यह प्रणाली गरीब और कमजोर वर्गों को सस्ती दर पर अनाज उपलब्ध कराती है। डिजिटल तकनीक के उपयोग से इसमें सुधार लाने का प्रयास किया जा रहा है।

3. मिड-डे मील योजना:— इस योजना के तहत स्कूलों में बच्चों को मुफ्त भोजन दिया जाता है। जिससे उनकी पोषण स्थिति में सुधार होता है और शिक्षा को भी बढ़ावा मिलता है।

4. प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना:— इसका उद्देश्य कृषि में सिंचाई सुविधाओं का विस्तार करना है। जिससे उत्पादन बढ़ाया जा सके।

5. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना:— यह योजना किसानों को फसल नुकसान से सुरक्षा प्रदान करती है। जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती है।

अध्ययन की समग्र चर्चा से स्पष्ट होता है कि भारतीय खाद्य सुरक्षा बहुआयामी प्रणाली है जिसमें उत्पादन, वितरण, क्रय-शक्ति, पोषण और स्थिरता परस्पर जुड़े हुए हैं। भारत की खाद्यान्न उत्पादन क्षमता और सार्वजनिक वितरण व्यवस्था ने खाद्य उपलब्धता के क्षेत्र में मजबूत आधार बनाया है, परंतु खाद्य सुरक्षा की अगली चुनौती 'पर्याप्त भोजन' से आगे बढ़कर 'पर्याप्त और पौष्टिक भोजन तक न्यायसंगत पहुँच' सुनिश्चित करना है।

साहित्य से यह भी स्पष्ट है कि PDS खाद्य असुरक्षा कम करने में महत्वपूर्ण है, लेकिन वितरण में रिसाव, लक्ष्यीकरण और प्रशासनिक समस्याओं का समाधान आवश्यक है। इसी प्रकार, अलग-अलग खाद्य-असुरक्षा मापन प्रणालियों के कारण स्थिति की तुलना कठिन होती है। इसलिए भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप बहुआयामी और नियमित खाद्य-सुरक्षा निगरानी प्रणाली विकसित करना उपयोगी होगा।

जलवायु परिवर्तन इस चर्चा को और महत्वपूर्ण बनाता है। यदि कृषि उत्पादन मौसमीय जोखिमों से प्रभावित होता है, तो खाद्य उपलब्धता, कीमतें और किसानों की आय तीनों प्रभावित हो सकते हैं। इसलिए सिंचाई, फसल विविधीकरण, बीमा, जल-संरक्षण, मृदा स्वास्थ्य और जलवायु-अनुकूल तकनीकों को खाद्य सुरक्षा रणनीति के साथ जोड़ना आवश्यक है।

प्रमुख परिणाम

- खाद्य सुरक्षा का अर्थ केवल खाद्यान्न उत्पादन की पर्याप्तता नहीं, बल्कि पहुँच, पोषण और स्थिरता भी है।
- भारत ने खाद्यान्न उत्पादन और सार्वजनिक वितरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण संस्थागत क्षमता विकसित की है।
- गरीबी, आय-असमानता और रोजगार की अस्थिरता खाद्य तक आर्थिक पहुँच को प्रभावित करती हैं।
- जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव कृषि एवं खाद्य सुरक्षा के लिए प्रमुख दीर्घकालीन जोखिम हैं।
- पोषण सुरक्षा के लिए भोजन की मात्रा के साथ गुणवत्ता, विविधता, स्वास्थ्य और स्वच्छता पर ध्यान आवश्यक है।
- भंडारण, परिवहन और आपूर्ति-श्रृंखला में सुधार से खाद्य हानि और अस्थिरता कम की जा सकती है।
- डिजिटल कृषि और आधुनिक तकनीक खाद्य उत्पादन एवं वितरण की दक्षता बढ़ाने की क्षमता रखती है, लेकिन छोटे किसानों की डिजिटल पहुँच सुनिश्चित करना आवश्यक है।

- महिला सशक्तीकरण और ग्रामीण आय में वृद्धि परिवारों की खाद्य एवं पोषण सुरक्षा को मजबूत कर सकती है।

निष्कर्ष

बदलते परिदृश्य में भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए खाद्य सुरक्षा एक बहुआयामी चुनौती है, जिसमें उत्पादन, वितरण, आर्थिक पहुँच, पोषण और स्थिरता सभी शामिल हैं। भारत ने खाद्यान्न उत्पादन और सार्वजनिक वितरण व्यवस्था में उल्लेखनीय प्रगति की है, लेकिन सभी नागरिकों तक पर्याप्त और पौष्टिक भोजन की समान पहुँच सुनिश्चित करना अभी भी महत्वपूर्ण नीति लक्ष्य है। जलवायु परिवर्तन, संसाधनों की कमी, आय-असमानता, पोषण असुरक्षा और आपूर्ति-श्रृंखला की कमजोरियाँ भविष्य की खाद्य सुरक्षा को प्रभावित कर सकती हैं।

अतः खाद्य सुरक्षा को कृषि नीति तक सीमित रखने के बजाय इसे रोजगार, ग्रामीण विकास, सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, तकनीकी नवाचार और सतत विकास के साथ एकीकृत करना आवश्यक है। सरकार, कृषि संस्थानों, बाजार तंत्र, स्थानीय निकायों और समुदायों के समन्वित प्रयास से खाद्य सुरक्षा को अधिक समावेशी और टिकाऊ बनाया जा सकता है। सही नीतिगत दिशा, तकनीकी नवाचार और संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के माध्यम से भारत न केवल अपनी खाद्य आवश्यकताओं को सुरक्षित कर सकता है, बल्कि वैश्विक खाद्य सुरक्षा में भी प्रभावी योगदान दे सकता है।

सुझाव

- जलवायु-अनुकूल कृषि, सूखा एवं बाढ़ प्रतिरोधी फसलें तथा जल संरक्षण को कृषि नीति में प्राथमिकता दी जाए।
- छोटे और सीमांत किसानों के लिए आधुनिक तकनीक, सिंचाई, वित्त, बीमा और बाजार सूचना तक पहुँच बढ़ाई जाए।
- PDS में डिजिटल पारदर्शिता, बेहतर लक्ष्यीकरण और शिकायत निवारण तंत्र को मजबूत किया जाए।
- कैलोरी उपलब्धता के साथ पोषण विविधता, प्रोटीन, सूक्ष्म पोषक तत्व और मातृ-बाल पोषण को खाद्य नीति में अधिक महत्व दिया जाए।
- वैज्ञानिक भंडारण, कोल्ड-चेन और ग्रामीण लॉजिस्टिक्स में निवेश बढ़ाया जाए।
- महिला किसानों और महिला स्वयं-सहायता समूहों को कृषि, प्रसंस्करण और विपणन से जोड़ा जाए।
- भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप नियमित और बहुआयामी खाद्य-सुरक्षा मापन प्रणाली विकसित की जाए।
- खाद्य अपव्यय कम करने तथा स्थानीय और टिकाऊ खाद्य प्रणालियों को बढ़ावा दिया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह, रमेश. Indian Economy.
2. कपिला, उमा. Indian Economy: Performance and Policies.
3. आचार्य, एस. एस. एवं अग्रवाल, एन. एल. Agricultural Economics.
4. देव, एस. महेंद्र. Food Security in India: Performance, Challenges and Policies.
5. भारत सरकार. Economic Survey of India, विभिन्न संस्करण.
6. भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय. Annual Reports, विभिन्न वर्ष.
7. Food and Agriculture Organization (FAO). The State of Food Security and Nutrition in the World, नवीनतम उपलब्ध संस्करण.
8. नीति आयोग. भारत में पोषण एवं खाद्य सुरक्षा पर रिपोर्टें, 2021-2024.
9. George, G. एवं McKay, D. (2019). भारत की सार्वजनिक वितरण प्रणाली एवं खाद्य सुरक्षा से संबंधित व्यवस्थित साहित्य समीक्षा.

10. McKay, D., Sims, M. एवं van der Pligt, J. (2023). भारत में खाद्य असुरक्षा के मापन से संबंधित व्यवस्थित समीक्षा.